तब करुणा से भरी हुई शंकर प्रिया भक्तवत्सला पार्वती देवी ने चंचुला से बड़े प्रेम पूर्वक बोलीं- हे सखी चंचुले मैं तुम्हारी की हुई इस स्तुति से बहुत प्रसन्न हूं बोलो क्या वर मांगती हो?

किं याचसे वरं ब्रूहि नादेयं विद्यते तव। मा-5-9

तुम्हारे लिए मुझे कुछ भी अदेय नहीं है। चचुंला बोली हे देवी मेरे पति बिंदुग इस समय पर कहां हैं, उनकी कैसी गति हुई है ?

यह सुनकर पार्वती जी प्रसन्नता पूर्वक बोली तेरा पति बिंदुग अपने बुरे पाप कर्मों के कारण मरकर नर्क में जाकर अनेकों वर्ष दुख भोग अब पाप शेष से वह पापी विंध्याचल पर्वत पर पिशाच हुआ है।

वहां वायु भोजी अनेकों कष्ट भोग रहा है। यह सुनकर चचुंला दुखी हो गई और भगवती से प्रार्थना करी कि आप मेरे पति का भी उद्धार करिए।

तब देवी ने कहा चचुंला यदि तुम्हारा पति शिवपुराण की कथा सुने तो उसे अवश्य सद्गति प्राप्त हो जाएगी। गौरा जी के ऐसे वचन सुनकर चंचुला बारंबार प्रणाम करने लगी।

देवी पार्वती ने शिव कीर्ति गायन करने वाले तुम्बरू गंधर्व को बिंदुग के कल्याणार्थ विंध्याचल पर्वत को भेजा। वह तुम्बरू और चचुंला विमान पर चढ़कर विंध्याचल पर्वत पर पहुंचे , वहां उन्होंने बड़े विशाल शरीर वाले पिशाच को देखा, उस भयंकर पिशाच को महाबली तुम्बरू ने बलपूर्वक पकड़कर पाशों से बांध दिया।

उस दिन उस क्षेत्र में प्रसिद्ध हो गया कि गौरी माता की आज्ञा से पिशाच तारने निमित्त तुम्बरू गंधर्व विंध्याचल पर शिवपुराण की कथा करेंगे। सब लोकों में महान कोलाहल हो गया कथा सुनने के लिए वहां बड़ा भारी समाज एकत्रित होने लगा।

सभी की कथा पर बड़ी रुचि थी, पासों से बंधे हुए पिशाच को वहां बिठा दिया गया , तब तुम्बरू हाथ में वीणा लेकर शिव कथा कीर्तन करने लगे। उन्होंने पहली संहिता से लेकर सातवीं संहिता तक महात्म्य सहित शिव महापुराण की कथा सुनाई तो समस्त श्रोता गण सब पापों से मुक्त हो गए।

उस पिशाच ने अपना वह शरीर त्यागकर दिव्य रूप प्राप्त किया। बिंदुग अपनी पत्नी सहित विमान पर बैठकर तुम्बरू के साथ शिव गुणगान करता हुआ शिवलोक को चला गया।

तब भगवान शंकर ने पार्वती सहित उसका बड़ा आदर सत्कार किया और उसे अपना गण बना लिया।

य इदं शृणुयाद्भक्त्या कीर्तयेद्वा समाहितः।
स भुक्त्वा विपुलान् भोगानन्ते मुक्तिमवाप्नुयात्।। मा-5-60

जो कोई इस पवित्र कथा को श्रद्धा पूर्वक सुनता है एवं कीर्तन करता है, वह इस लोक में सुखों को भोगकर अंत में मुक्ति को प्राप्त कर लेता है।

शौनक जी बोले- हे सूत जी! आप परम शैवी हैं इसलिए कृपा कर शिव पुराण के श्रवण की विधि भी कहिए जिससे श्रोतागण सम्पूर्ण फल को प्राप्त कर सकें।

सूत जी बोले- हे शौनक जी अब संपूर्ण फल की प्राप्ति के लिए शिव पुराण के श्रवण विधि सुनिए। सर्वप्रथम ज्योतिषी से पुराण निर्विघ्नं समाप्ति के हेतु शुभ मुहूर्त निकलवाए, फिर उसके अनुसार देश विदेश में पत्र भिजवा कर अपने इष्ट मित्रों व बंधु बांधव को आमंत्रण दें।

शिव पुराण के आयोजन स्थल दिव्य बनवाएं- शिवालय, तीर्थ, वन अथवा घर में ही वह कथा मंडप बनवाएं वह मंडप को ध्वजा पताका आदि से सुसज्जित करें और शोभायमान बनाएं।

विवाहे यादृशं वित्तं तादृशं कार्यमेव ही।
अन्या चिन्ता विनिर्वार्या सर्वा शौनक लौकिकी।। मा-6-19

विवाह उत्सव में जैसे उल्लासपूर्ण मनः स्थिति होती है वैसे ही कथा उत्सव में रखनी चाहिए। सब प्रकार की लौकिक दूसरी चिंताओं को भूल जाना चाहिए।

विवाहे यादृशं वित्तं तादृशं परिकल्पयेत्।

और जैसे विवाह आदि में प्रसन्नता पूर्वक धन खर्च करते हैं, वैसे ही कथा महोत्सव में भी प्रसन्न होकर बिना कंजूसी के धन खर्च करना चाहिए।

क्योंकि धन और जीवन इनका धर्म व उपकार में लगाना ही सार्थकता है- कहा भी गया है शास्त्रों में की-

धनानि जीवितन्चैव परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत।
सन्निमित्ते वरं त्यागो विनाशे नियतं सती।।

धन और जीवन को धर्म में लगाना ही सार्थक है क्योंकि ना चाहने पर भी यह दोनों का नाश एक दिन निश्चित ही है। सज्जनों हमारी वास्तविक यात्रा जन्म के बाद से प्रारंभ नहीं होती जन्म से लेकर मृत्यु तक वह हमारे लिए एक अवसर होता है कि हम अपने वास्तविक यात्रा को उत्तम बना सकें।

धर्म रूपी धन एकत्रित कर सकें, हम अज्ञान वश माया में पडकर के जो मैं और मेरा के असद आग्रह में पडकर सारा जीवन भगवत भजन के बिना समाप्त कर देते हैं ,वलेकिन अंत समय सब यहीं छूट जाता है।

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे
नारि गृहद्वारि जनाश्मसाने।
देहश्चितायां परलोक मार्गे
धर्मानुगो गच्छति जीव एकः॥

सारा जीवन जिस धन के लिए समाप्त कर देते हैं, वह धरा का धरा रह जाता है। पशु खूंटे पर बंधे ही रह जाते हैं, पत्नी द्वार तक रह जाती है, स्वजन संबंधी शमशान तक जाते हैं, देह चिता तक जाता है और फिर जीव की वास्तविक यात्रा शुरू होती है और जीव के साथ सिर्फ- **धर्मानुगो गच्छति जीव एकः।** केवल धर्म ही , उसका भजन ही, सत्कर्म ही उसके साथ जाता है और सद्गति कराता है।

तो प्रेम पूर्वक इस पावन शिव महापुराण की कथा का श्रवण करें और उसका मनम भी करें, जो नराधम भक्ति भाव से हीन होकर इस कथा को सुनते हैं उन्हें कोई फल नहीं मिलता और वे जन्म जन्म दुख पाते हैं।

जो पुराण की पूजा यथाशक्ति भेंटों के द्वारा ना करके इस कथा को सुनते हैं वह मूर्ख दरिद्री होते हैं। जो वक्ता को प्रणाम किए बिना बैठ जाते हैं कथा सुनने के लिए वे-

असम्प्रणम्य वक्तारं कथां शृण्वन्ति ये नराः।
भुक्त्वा ते नरकान सर्वांस्ततः काका भवन्ति हि॥ मा-6-46

वे सब घोर नरक भोगने के बाद अर्जुन वृक्ष बनते हैं।

तथा श्रोता को चाहिए कि उच्च आसन पर बैठकर कथा श्रवण ना करें। जो जन इस पवित्र कथा को अपने जीवन में नहीं श्रवण करते वे करोड़ों जन्म तक नरक की यातना भोग कुकर कुकर बनते हैं।

(श्रोताओं के पालन करने योग्य नियम)

शौनक जी बोले- हे सूत जी! आपने यह परम पवित्र और अद्भुत कथा तो सुना दी अब आप कृपा करके लोक कल्याणार्थ शिवपुराण के श्रोताओं के नियम सुनाइए ?

सूत जी बोले- हे शौनक जी! दीक्षा रहित लोगों को कथा श्रवण करने का अधिकार नहीं है ,इसलिए श्रोताओं को पहले वक्ता से दीक्षा लेनी चाहिए।

श्रौतुकामैरतो वक्तुर्दीक्षा ग्राह्य च तैर्मुने। मा-7-4

कथा वृती को ब्रम्हचर्य, भूमि पर शयन करना चाहिए, शुद्ध होकर भक्ति पूर्वक शिवपुराण सुनते हुए उपवास करके एक ही समय भोजन करें।
घृतपान, दुग्धपान अथवा फलाहार करते हुए कथा अवधि तक एक बार ही भोजन करें और तामसी वस्तु खाना वर्जित है।

श्रोता को चाहिए कि नित्य प्रति कथा मंडप पर बने सभी मंडल वेदियों का पूजन करे, शिव पुराण का पूजन करे, पुराण वक्ता एवं कथा में वर्णित सभी आचार्य का पूजन करके यथाशक्ति दक्षिणा प्रदान कर प्रणाम करे।

शिवपुराण की कथा पूर्ण होने पर विरक्त है तो गीता का पाठ करे, श्रोता यदि गृहस्ती है तो शुद्ध हवि के द्वारा हवन करे। यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन कराए एवं शिव पुराण सब पुराण में शिरोमणि है।

जो प्राणी इस जगत में सदाशिव का ध्यान करते हैं और उनकी वाणी सदैव उनकी स्तुति करती रहती है, वे इस अपार भव सागर से सहज ही तर जाते हैं।

(बोलिए शिव महापुराण की जय)
सांब सदाशिव भगवान की जय

विश्वेश्वर संहिता

तीर्थराज प्रयाग में मुनियों का समागम-
व्यास जी बोले-

धर्मक्षेत्रे महाक्षेत्रे गंगा कालिन्दि सगंमे।
प्रयागे परमे पुण्ये ब्रह्म लोकस्य वर्त्मनि।। वि-1-1

माघ मकर गत रवि जब होई। तीरथ पतिहिं आन सब कोई।।

एक समय गंगा और यमुना के संगम प्रयाग में जब मुनियों ने एक विराट सम्मेलन किया, तब परम पौराणिक सूत जी के आने पर सभी लोगों ने अपने अपने आसनों से उठकर उनकी यथोचित अभ्यर्थना की पूजा सत्कार किया।

और सभी ने हाथ जोड़कर यह प्रार्थना की- हे मुनीश्वर कलयुग में सभी प्राणी पाप, ताप से पीड़ित हो सत कर्मों से रहित, पर निंदक, चोर,परस्त्रीगामी, दूसरों की हत्या करने वाले, देहाभिमानी, आत्मज्ञान से रहित, नास्तिक, माता-पिता के द्वेषी और स्त्रियों के दास हो जाएंगे।

चारों वर्णों के लोग अपना अपना धर्म भूल जाएंगे, पथभ्रष्ट हो जाएंगे प्राय: इस प्रकार स्त्रियों में भी धर्म का नाश हो जायेगा। वे तमोगुणी, पति से विमुखी, भक्ति से रहित हो जाएंगी। हे सूत जी-

एतेषां नष्ट बुद्धीनां स्वधर्म त्यागशीलिनाम्।
परलोके पीह लोके कथं सूत गतिर्भवेत्।। वि-1-35

इस प्रकार जिनकी बुद्धि नष्ट हो गई है और जिन्होंने अपने धर्म का परित्याग कर दिया है। ऐसे लोगों को इस लोक और परलोक में उत्तम गति कैसे प्राप्त होगी ?

व्यास जी बोले- तब सूत जी ने भगवान शंकर का स्मरण किया और मुनियों से कहने लगे-

साधु पृष्टं साधवो वस्त्रैलोक्य हितकारकम्।
गुरुं स्मृत्वा भवत्स्नेहाद्वक्ष्ये तच्छृणुतादरात।। वि-2-1

हे मुनियों यह आपने त्रिलोक हितकारी सर्वोत्तम प्रश्न किया है। मैं गुरुदेव व्यास जी का स्मरण करके आप लोगों से स्नेह वस इस विषय का वर्णन करूंगा आप लोग आदर पूर्वक सुनें।

तदपि जथा श्रुति जस मति मोरी। कहिहउँ देखि प्रीति अति तोरी।।

सबसे उत्तम है वह है शिव महापुराण की पावन कथा जो वेदांत का सार सर्वस्व है।

वेदान्त सार सर्वस्वं पुराणं चैव मुत्तमम्।
सर्वाघौघोद्धारकरं परत्र परमार्थदम्।। वि-2-2

यह पावन शिव कथा वक्ता श्रोता के समस्त पाप राशियों को भस्म भस्म करने वाला है। वेद व्यास के कहे इस पुराण का महत्व बहुत है। इसके कीर्तन और श्रवण का जो फल प्राप्त होता है उसके फल को में नहीं कह सकता , परंतु कुछ महात्म्य आप लोगों से कहता हूं ध्यान देकर सुनिए।

यदि शिव पुराण का एक या आधा श्लोक भी कोई पड़ेगा तो पाप से छूट जाएगा और सावधानी से संपूर्ण शिव पुराण की कथा को सुनेगा तो जीवन मुक्त हो जाएगा। जो इसके कहे अनुसार आचरण करेगा-

दिने दिने अश्वमेधस्य फलं प्राप्नोत्यसंशयम्। वि-2-22

तो निसंदेह एक एक अश्वमेध यज्ञ का फल पाता है।

तावत्कलिमहोत्पाता: सञ्चरिष्यन्ति निर्भया:।
यावच्छिव पुराणं ही नोदेष्यति जगत्यहो।। वि-2-6

कलयुग के महान उत्पात अभी तक निर्भय होकर विचरेंगे जब तक यहां जगत में शिव पुराण का उदय नहीं होगा।

जो भैरव जी की प्रतिमा के सामने इसका तीन बार पाठ करता है उसके सभी मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं।

यह शिव महापुराण में चौबीस हजार श्लोक व सात सहिताएं हैं - **1- विद्येश्वर संहिता, 2- रुद्र संहिता, 3- शतरुद्र संहिता, 4- श्री कोटि रूद्र, 5- श्री उमा, 6- कैलाश, 7- वायवीय संहिता।**

जो इस सप्त संहिता से युक्त श्री शिव महापुराण को आदर पूर्वक पड़ेगा या सुनेगा वह जीवन मुक्त हो जाएगा।